ISSN: 2231-3869 Kashf

जून 2018

शोधात्मक सुल्लिखित अर्द्धवार्षिकी

कशफ़

संपादक :

डॉ. विनोद तनेजा

वर्ष 17 पंजी -8 अंक - 1 जून 2018
ISSN: 2231-3869 Kashf शीर्षक सत्यापन पत्र PUNBIL01098/19/1/2010-TC

कश्फ़

[शोधात्मक-उल्लिखित (Referred Journal)- द्वैभाषिक (Bilingual) अर्द्धवार्षिकी]

2018

संरक्षक :-
श्रीमती प्रकाश कौर
(दिल्ली)
श्री चरणजीत आनंद
(कोलकाता)

न्यायिक सलाहकार :-
श्री विभोर तनेजा
एडवोकेट, चंडीगढ़

व्यवस्था और संचालन
श्रीमती नीलम तनेजा
विभोर प्रकाशन,
516 जोशीपुरा
पो. खालसा कॉलेज,
अमृतसर -1432

संपादक : डॉ. विनोद तनेजा

'कश्फ़' एक अव्यवसायिक शोध पत्रिका है।

सदस्यता सहयोग : निर्धारित विषय से सम्बन्धित शोधालेख संरक्षकीय : 11,100 रु.

क्या, कहां पढ़ें?

सम्पादकीय 2
भारतीय संस्कृति तथा सहित में राष्ट्रीयता की झलक डॉ. साधना 5
आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के संबंधों में भारतीय संस्कृति जसपाल कौर 9
गाँधी जी के आध्यात्मिक विश्वास
(सत्य के प्रयोग : आत्मकथा के विशेष सन्दर्भ में) प्रो .(डॉ) अनीता बरेन्द्र 16
भारतीय चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में आत्मा की अवधारणा डॉ. निर्मल कौशिक 24
प्रेम की अनन्य पुजारिन मीरा डॉ. राहुल 42
वैज्ञानिक उपलब्धियाँ और सिसकता जीवन
(सन्दर्भ-नरेश मेहता का साहित्य) डॉ. बिन्दु चिब 56
छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना डॉ. कृष्णा राणा 62
प्रो. कुसुम डोभाल मिश्र
पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता डॉ. अंजलि उपाध्याय 71
पुरातत्व के अध्ययन में आवश्यक नियमित सजगता सरोज कुमारी 75
उर्दू कहानी में यथार्थपूर्ण नये अनुभव श्रीमती आशा जैन 82
हिन्दी कहानी में यथार्थपूर्ण नए अनुभव डॉ. ओम प्रकाश सिंह 90
सुरेन्द्र वर्मा के कथा- साहित्य में चित्रित महानगर
और समस्याएँ डॉ (श्रीमती) नीतिका रानी 99
कुसुम अंसल के उपन्यास-साहित्य में नारी चेतना डॉ. नीलोफ़र मनजूर 113
सुषम बेदी के उपन्यास-साहित्य में नारी-विमर्श डॉ. ज़ाहिदा ज़बीन 118
(शोधार्थी)-सब्ज़ार अहमद भट्ट
'खाली घरौंदे' उपन्यास पारिवारिक संबंधों की यथार्थपूर्ण
व्यथा-कथा डॉ. जाहिदा जबीन 123
(शोधार्थी)-मुदिस्सर अहमद भट्ट
डा. हरिदत्त भट्ट शैलश की जीवनयात्रा डॉ.कल्पना थपलियाल 127
एक था कलाकार : खिलंदड़ व्यक्तित्व की जीवन यात्रा
से रूबरू कराता उपन्यास डॉ. सविता मिश्र 132
'वचन' रक्तहीन क्रांति का सामाजिक उद्घोश डॉ. रंजना राज़दान 144
बालसाहित्यकार डा. श्रीप्रसाद के काव्य में वस्तु एवं शिल्प गणेश सिंह 158

वैज्ञानिक उपलब्धियाँ और सिसकता जीवन (सन्दर्भ–नरेश मेहता का साहित्य)

डॉ. बिन्दु चिब

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान द्वारा मानव को दो प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। प्रथम वर्ग में वह उपलब्धियाँ आती हैं जो मनुष्य के जीवन को भौतिक रूप से समृद्ध बनाती हैं। भौतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर मनुष्य को विज्ञान ने अनेक उपयोगी एवं लाभप्रद वस्तुएँ प्रदान की हैं। मुद्रण की कला विज्ञान की अनुपम देन हैं। शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं कला के क्षेत्र में भी विज्ञान की देन अतुलनीय है। विज्ञान ने मनुष्य को दीर्घायु भी प्रदान की है। कृषि उत्पादन के क्षेत्र में विज्ञान ने मानव की अमूल्य सेवाएँ की हैं। बड़े–बड़े बाँध, जो आज विज्ञान की सहायता से बाँधे जा रहे हैं, औद्योगिक क्षेत्र में तो विज्ञान ने अनेक परिवर्तन कर दिये हैं। विज्ञान ने मनुष्य को जो सुख–सुविधाएँ प्रदान की है, उनसे उसका जीवन सुखी हो गया है। वस्त्र, भोजन, आवास, स्वास्थ्य, सन्तान, मनोरंजन, सौन्दर्य प्रसाधन, यातायात के साधन, दूर संचार, पठन–पाठन की सुविधाएँ, सुरक्षा के सामान आदि की व्यवस्था में विज्ञान ने मनुष्य की बड़ी सहायता की है। वर्तमान युग में हम विज्ञान से इस तरह बंध गये हैं कि आज हमारे जीवन के दैनिक कार्य, खान–पान, रहन–सहन, पहनावा, मनोरंजन, आराम, व्यवसाय, पर्यटन, खेलकूद आदि में भी इसका समावेश है। यही कारण है कि वर्तमान युग को 'विज्ञान युग' कहा जाता है। प्रातः काल सोकर उठने से लेकर रात्रि को सोते तक ऐसा कोई भी क्षण नहीं है जब हम विज्ञान की देन का उपयोग न करते हो। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है, जैसे– जन जीवन, कृषक जीवन, औद्योगिकरण, औषधि, शल्यविज्ञान, प्राकृतिक और जीव विज्ञान, संचार–सूचना, प्रौद्योगिकी तथा अन्य क्षेत्रों में भी । अतः यह कहना उचित है कि विज्ञान के ज्ञान विस्फोट ने हमारे भौतिक जीवन को पूरी तरह से समृद्ध किया है।

वैज्ञानिक प्रभाव के कारण ही बड़े –बड़े महानगरों का उदय हुआ है।

इसका बोध जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। यहाँ तक सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब कहलाने वाला साहित्य क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। मैन्चेस्टर और बर्मिघम जैसे लोहे के नगरों में मानव खो गया है। इस महानगरीय सभ्यता का कवि नरेश मेहता ने इस प्रकार चित्र प्रस्तुत किया है –

वस्त्रनगर मेंचेस्टर की वे दूर दिख रहीं
बड़ी चिमनियाँ / जहाँ बन रहे चन्दन रंगों वाले
रेशम वस्त्र सजीले, / देश–देश की परिधानित होंगी कन्याएँ ।
उतर, चलो नीचे बरमिंघम– / काला गगन / हवा साँवली
जहरीले धूएँ के बादल / चीख रही सीटी जिनमें मिल।
भद्दी मोटी लालटेन ले / घूम रहे गोदामों में ये मोटे वार्डर
जाँच रहे रेलों के पहिये / हथौड़ियों से घन–घन करके,
मोटे ओठों में चुरूट जल रहा।
आसमान की छाती में / इंजिन का सारा शोर भर रहा।'

अतियांत्रिकता और अतिभौतिकता का प्रमाण देते हुए कवि अमरीका का चित्र खींचता है –

गगन विचुम्बित इन महलों की / मनुज नींव है / जिनमें पैसे का निवास है।
एटम और उद्रजन बम हैं / नभगामी महलों के कर में,
चाह रहे जो सृष्टि–धरा को / केवल हिरोशिमा कर देना ।
इसने पैसों की ईटों से / चाहा ऊँचे महल बनाना ।'

वास्तव में कवि आज के महानगरों की अतियांत्रिकता तथा अतिभौतिकता का विरोधी है, जिसके शोर–शराबे में मनुष्य की आत्मा का संगीत लुप्त हो गया है।

महानगरीय सभ्यता की कृत्रिम और आडम्बरपूर्ण प्रवृत्ति पर भी कवि व्यंग्यात्मक प्रहार करता है। 'बूढ़े मसूढ़ों का जुलूस' कविता में कवि ने दर्शाया है कि आदमी नकली सफलताओं और सुनहरी कल्पनाओं में जीता है। ये झूठी चमकदार सफलताएँ ज़िन्दगी के उपन्यास को कुछ नहीं देती ।

मुझे अफसोस है / दाँत के डॉक्टर की दुकान की ओर
सफल व्यक्तियों का / दन्तहीन असफल जुलूस–
चालाक आकाश के नीचे / जूठे प्याले से शहर में
विज्ञापन वाली शाम को कंधे पर उठाये / चला जा रहा हैं
जब मैं मात्र अकेला होता हूँ / तब मैं नहीं
इन बूढ़े मसूढों का / सफल व्यक्तियों का जुलूस होता है।[3]

विज्ञान ने मानव को जो सुविधाएँ प्रदान की हैं, इन सांसारिक सुविधाओं का महाजाल पूरी मानवता को घेरे हुए आज अत्यधिक शक्तिशाली होता जा रहा है। आज वस्तुएँ मनुष्य की मूल्य–दृष्टि में आती चली जा रही हैं। विज्ञान ने अपने अन्वेषण की दिशा इन्हीं सुविधाओं को अर्जित करने की मानवीय क्षमता की ओर मोड़ दी है, जिसके कारण पूरे विश्व में एक दौड़ चल पड़ी है। मनुष्य की इन्द्रियाँ धीरे–धीरे अकर्मण्य होती जा रही हैं। उसकी त्वचा न गर्मी और न सर्दी सहन कर सकती है, उसके पाँव धरती पर अधिक चल नहीं सकते, उसके हाथ कठोर और थकाने वाला कार्य नहीं कर सकते । वह चारों ओर से एक प्रकार के आवरण से ढकता जा रहा है। वास्तविक जीवन तथा प्रकृति से उसका संबंध छूटता जा रहा है। सुख–सुविधाओं के साधनों को अर्जित करने के लिए वह सब कुछ दांव पर लगाता जा रहा है। इस तरह यह सुख–सुविधाएँ व्यक्ति का पर्याय बनती जा रही हैं। इस संदर्भ में 'महाप्रस्थान' के युधिष्ठिर की यह उक्ति प्रासंगिक प्रतीत होती है –

ये वस्तुएँ / ये सफलताएँ / एक दिन उसका पर्याय बन जाती हैं।[4]

आज मनुष्य की आकांक्षा इन्हीं वस्तुओं में सिमट कर रह गई है। बड़े–बड़े राजपुरुष इन्हीं से पूरी तरह डूबे हुए हैं। मध्यवर्ग के लोग इसी दिशा की ओर भागते जा रहा हैं। परन्तु कवि युधिष्ठिर के गम्भीर स्वर में समाज को सचेत कर रहा है –

ये दुर्ग, प्रासाद, स्मृति भवन / चरण–प्रशस्तियाँ
ये झूठे इतिहास वाले शिलालेख / व्यक्ति को अमरता देंगे ?[5]

नरेश मेहता अति भौतिकता के विरुद्ध हैं क्योंकि इसी के कारण व्यक्ति अकर्मण्य होता जा रहा है। उसकी दृष्टि केवल सुख–सुविधाओं के अर्जन तक सीमित होती जा रही है।

विज्ञान ने जहाँ मनुष्य–जीवन को भौतिक दृष्टि से सुख–सुविधाएँ प्रदान कीं, वहीं उस परमाणु–शक्ति का उपयोग यदि अनन्तकाल तक चलने वाली बिजली घर बनाने में किया है, तो उसी के द्वारा भयंकर और विनाशकारी परमाणु–बम भी बनाये गये हैं, जिनकी संहार शक्ति की कल्पना केवल इसी से की जा सकती है कि पिछले महायुद्ध में जापान के दो नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर अमेरिका ने केवल दो ही परमाणु बमों का प्रयोग किया था, जिसके फलस्वरूप अकेले हिरोशिमा नगर में दो लाख जीवित को लील गया था। सारा नगर रेत का निर्जन क्षेत्र बनकर रह गया था। इस भयानक प्रयोग का नरेश मेहता पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उन्होंने अपनी कविता 'समय देवता' में विज्ञान की विध्वंसात्मक भूमिका के अनेक चित्र प्रस्तुत किये हैं। हिरोशिमा के सन्दर्भ में विज्ञान की विध्वंसात्मक भूमिका को कवि ने बड़ी व्यथा के साथ अभिव्यक्त किया है –

जापान देश का / जो कि मर चुका / एटम बम से ।
डूब गयीं बूटों की टापें / सिसक रहा कोढ़ी का जीवन,
विज्ञान / धुएँ के अजगर सा है लील रहा
सब रंग रेशमी मनु–श्रद्धा का / हिरोशिमा में मनुज मर गया
वही मनुज / जिसके सिर पर यह गगन–मुकुट है।[6]

आज परमाणु बम से कई हज़ार गुणा विनाशकारी क्षमता वाले क्षेप्सास्त्र, हीलियम, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन बम तैयार हो चुके हैं। यदि ये किसी क्षण भूल से अथवा

नासमझी से विश्वयुद्ध का साधन बन गये, तो कुछ क्षणों में ही ध्वंस की ज्वाला सारे भूमण्डल को घेर लेगी । इसी विध्वंस की भूमिका की कल्पना कर नरेश मेहता ने 'संशय की एक रात' में राम को युद्ध से विमुख होते हुए दिखाया है।

विज्ञान की विध्वंसात्मक भूमिका से परिचित करवाने के लिए नरेश मेहता ने 'समय देवता' में विविध राष्ट्रों – जापान, चीन, बर्मा (मयंमार) आदि में होने वाले युद्धों का वर्णन किया है। कवि 'समय देवता' को चीन में होने वाले युद्ध में हुए विध्वंस से परिचित करवाता है –

समय– देवता !
बम के गोलों से भी कभी /धरा यह बाँझ हुई है ?
चीन देश के नगर–ग्राम –घाटी जंगल में
भरा हुआ धूआँ ही धूआँ,
गोबी की मंगोल –रेत पर /युद्ध–लाश दुर्गन्ध दे रही,
पेकिङ. की चिकनी सड़कों पर/पिछला जीवन मरा पड़ा है,
लगातार बारूद उगलते बन्दूकें भी हाँफ रही हैं।[7]

इस प्रकार के अनेक चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि ने वैज्ञानिक युग के प्रति आक्रोश व्यक्त किया हैं जिसने असंख्य लोगों की जानें ली हैं। कवि इस वैज्ञानिक व्यवस्था की कड़ी आलोचना करते हुए कहता है –

वह दिन की चिड़िया/ गगन– आम पर दिन भर बैठी
धूप सुनाती–/वही सृष्टि– श्री मनुज आज
विज्ञान– कब्र में मरा पड़ा है ।
दौड़ रही हैं, गंधक और फासफोरस की/ पीली लपटें
जिसमें इस जापान देश का सदियों का/संगीत जल गया
बाँस–चिकों के चित्र जल गये/महल–फैक्टरी सभी बुझ गये।[8]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नरेश मेहता ने विज्ञान के विनाशकारी

रूप को विशेष रूप से प्रस्तुत करने के लिए अपनी कविता 'समय देवता' को आधार बनाया है। यह कविता द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत–विभाजन के परिणत साक्षात्कार के दौर में लिखी गई है। इस दौर में 'समय–देवता' को, 'विश्व–मानव' द्वारा पूर्ण पृथ्वी की यात्रा कराते हुए, जैसे उसके ही प्रलय–सृजन से उसका आमना–सामना कराया गया है। विज्ञान ने परमाणु–संरचना के माध्यम से विश्व रहस्य को अनावृत्त कर दिया है, और हमें नये सिरे से सोचने के लिए विवश किया है। कवि आणविक अस्त्रों के विरुद्ध चेतावनी देना चाहता है तभी वह बार–बार समय–देवता को याद करता है, क्योंकि नागासाकी–हिरोशिमा पर फेंके गए बम का कुप्रभाव किसी से छिपा नहीं है। यदि अणुबम और परमाणु बम पर अंकुश न लगा तो सम्पूर्ण मानवता समाप्त हो सकती है। आज की यह ज्वलंत समस्या है। कवि ने विज्ञान के विध्वंसात्मक चित्र खींच कर इसी समस्या की ओर संकेत किया है।

<u>संदर्भ</u>

1,2. नरेश मेहता : मेरा समर्पित एकांत, पृ0 62–63, 58
3. वही : बोलने दो चीड़ को, पृ0 –74
4,5. वही : महाप्रस्थान, पृ0 –106, 106
6–8. वही : मेरा समर्पित एकांत पृ0 50, 48–49, 50–51

सहायक प्रोफ़ेसर,
राजकीय एम.ए.एम महाविद्यालय,
जम्मू ।